National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 128-131
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

दीपिका व्यास
शोधार्थी , हिंदी विभाग,
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा (हरियाणा)

जसबीर सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा (हरियाणा)

Correspondence:
दीपिका व्यास
शोधार्थी , हिंदी विभाग,
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा (हरियाणा)

बेतवा बहती रहे में स्त्री बोध एवं समीक्षा

दीपिका व्यास, डा. जसबीर सिंह

सांराश:-

प्रारंभिक स्त्री-लेखन समाज के आदर्श और नैतिक सिद्धांतो पर आधारित था। स्वतंत्रता के बाद परिवर्तित परिस्थितियों में कथावस्तु के केंद्र में स्त्री-पुरूष संबंधों को भिन्न दृष्टिकोण से दर्शाने की हिम्मत दिखाई दी। वर्तमान सदी के छोर तक पहुँचते पहुँचते कथा-संसार समग्र दिखाई देने लगा है। आधुनिक महिला कथाकारों ने स्त्री-जीवन के सवालों पर धारदार कलम की ताकत दिखाई है। इन कथाकारों मे मैत्रेयी का नाम अग्रणी है। मैत्रेयी ने स्वयं द्वारा भोगे जीवन को शब्दों में उकेर कर स्त्री बोध को सजीव करने का कार्य किया है।

मैत्रेयी की कथाओं का केंद्र बिन्दु बुंदेलखंड और आसपास के क्षेत्र का लोकजीवन है। इस माहौल मे जीवनयापन कर रही 'उर्वशी' नामक स्त्री के त्रासदी भरे जीवन को आधार बनाकर उपन्यास 'बेतवा बहती रही' की रचना की गई है। यह मैत्रेयी जी का प्रथम सफल उपन्यास है। मैत्रेयी का मुख्य उद्देश्य स्त्री-सत्ता के सामर्थ्य को ऊपर उठाना, स्त्री विरोधी रूढ़ीवादी परंपराओं का प्रतिरोध करना, अंधविश्वासों पर से पर्दा उठाना तथा स्त्री की स्वतंत्र पहचान को उजागर करना रहा है। इस उपन्यास में उर्वशी की साधना रूपी परित्याग और सेवाभाव रूपी समर्पण को व्यापक रूप में चित्रित किया गया है। पुरुष प्रधान समाज में पुनर्विवाह एक ऐसी व्यवस्था है जो पुरुष के लिए सुखद व मान-मर्यादा बढाने वाली वहीं एक स्त्री के भविष्य की सुरक्षा पर शंका का प्रश्नचिन्ह लगाने वाली। स्त्री मन अनेक तरह के संशयों मे ही डूबा रहता है। इस उपन्यास में मैत्रेयी ने समाज के दोगलेपन, लैंगिक भेदभाव, वैवाहिक-अव्यवस्था, अंधविश्वास, स्त्री-शिक्षा, स्त्री परित्याग को प्रदर्शित किया है।

बीज शब्द - पुरुष-सत्ता, लैंगिक भेदभाव, वैवाहिक-अव्यवस्था, अंधविश्वास, स्त्री-शिक्षा, स्त्री परित्याग।

वर्तमान स्त्री-साहित्य, स्त्री की संवेदना, इच्छा, स्वतंत्रता, सम्मान और सत्ता को समाज में पुरूष के बराबर के अधिकार दिलाने को प्रयासरत है। उपन्यास की नायिका उर्वशी जैसी त्रासदी भरी कहानी किसी भी गरीब, निसहाय स्त्री की हो सकती है। मैत्रेयी पुष्पा लिखती है- "विपन्नता का अभिशाप-शोषण और सनातन संघर्ष। एक विवश यातनामय नारकीय जीवन!"[1] पुरुष प्रधान समाज ने नारी को हमेशा महत्वहीन और विलासिता की वस्तु ही समझा है। नारी की जद्दोजहद पुरुष-मनोवृति के प्रति है। मैत्रेयी पुष्पा, पुरुष प्रधान समाज के भयावह तथा विद्रूप चेहरे को आईना दिखाना चाहती है। उनके साहित्य के केंद्र में स्त्री है। स्त्री अपनी जिंदगी, अपनी अभिलाषा के अनुसार जीना चाहती है जो समाज की नजरों में भी गरिमापूर्ण हो।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास सर्वहारा किसान की कभी न खत्म होने वाली यातनाओं तथा नायिका उर्वशी के त्रासदी भरे जीवन को अंकित करता है। उपन्यास के अन्य सभी स्त्री चरित्र भी अपनी अलग पहचान लिए है। मीरा जीजी, नानी, दादी, बड़ी दादी, शेरा की साहसी पत्नी, ये सभी असाधारण स्त्री चरित्र हैं। मैत्रेयी का उद्देश्य स्त्री-सत्ता और सामर्थ्यशोशन को स्वतंत्र रूप से उभारना, स्त्री विरोधी रूढीवादी पंरपराओं का प्रतिरोध करना, अंधविश्वासों पर से पर्दा उठाना तथा स्त्री की स्वतंत्र पहचान को उजागर करना रहा है।

इस उपन्यास में उर्वशी की साधना रूपी परित्याग और सेवाभाव रूपी समर्पण को व्यापक रूप में चित्रित किया गया है।

बरजोर सिंह के घर को आबाद करने तथा भाई अजीत की महत्वकांक्षा को पूर्ण करने हेतु उर्वशी पुनर्विवाह कर लेती है। उर्वशी का कष्टपूर्ण जीवन ही उसे दृढ़ता प्रदान करता है। पुरूष प्रधानता की छत्र-छाया में पली बढ़ी उर्वशी कुपित हो पुरुष वर्ग के प्रति विद्रोही रूप धारण कर लेती है। अपने भाई अजीत को कहती है- "काहे को करते हो ऐसा अन्याय? क्या बिगड़ रहा है तुम्हारा अजीत भैया? मैं कोई ढोर नहीं जिसे खूँटे, रस्से से बांधकर रखना लाजिमी है।"[2]

उर्वशी अपने परिवारजनों की स्वार्थ पूर्ति हेतु बलि का बकरा बनती है। उपन्यास में भाई अजीत अपनी एकमात्र बहन उर्वशी को धनाढ्य 'दुहाजू' को बेचने का प्रयत्न करता है लेकिन सफल नहीं हो पाता है। मीरा के नाना, उर्वशी का विवाह एक संस्कारी लड़के सर्वदमन से करवाते हैं। उर्वशी का जीवन खुषी और उमंगों से भर जाता है। वह पिछले सारे दुःखों को भूलाकर आनंदमय जीवन प्रवाह में खो जाती है लेकिन किस्मत को यह सब मंजूर कहाँ! सर्वदमन की आकस्मिक मौत हो जाती है। उर्वशी के जीवन में तो जैसे पहाड़ टूट पड़ा हो। यह मौत उर्वशी के लिए जहा 'जिंदा मौत के सफर' की शुरूआत जैसी है, वहीं स्वार्थी एवं लालची भाई अजीत के लिए सौभाग्य के द्वार खोलने वाली। वह दस बीघा खेत के बदले उर्वशी का पुर्नविवाह मीरा के वृद्ध विधुर बाप बरजोर सिंह के साथ करवा देता है। यह स्त्री अर्थात उर्वशी के परित्याग को नहीं बल्कि बलिदान को दर्शाता है।

धन की लालसा के कारण पारिवारिक संबंध भी तार-तार होते जा रहे है। उर्वशी , मीरा से कहती है- "अजीत भैया से भाई बहन कौ संबंध रहौ कहां है। बहन तो उनके लिए रुपइया बनके रह गयी" "केवल कागज के कुछ नोट। उर्वशी तो कब की खत्म हो गई मीरा! मिट गऔ वो संबंध।"[3]

स्त्री-जीवन कांटों भरे ताज के समान है। अजीत अपनी महत्वाकांक्षा और स्वार्थपूर्ति के लिए विधवा बहन उर्वशी के ससुराल में बखेड़ा खड़ा करता रहता है। अजीत कहता है- "रखैल बनकर रहैं हमारी बहन, सो नहीं हो सकत। असपेर के गाँवों में हमारी इज्जत-आबरू नहीं है क्या?"[4] उर्वशी के जेठ के साथ विवाद कर वह उसे अपने घर ले आता है। समाज की वैवाहिक अव्यवस्था (पुनर्विवाह) के नाम पर उसका सौदा कर देता है। मैत्रेयी ने उर्वशी के जीवन को ध्यान में रखते हुए लिखती है- विधवा विवाह (पुनर्विवाह) स्त्री की सुख-सुविधा और स्वतंत्रता का पर्याय ना होकर उसके लिए यातना के नए द्वार खोल देता है। विधवा विवाह के नाम पर उर्वशी जैसे असंख्य लड़कियों का क्रय-विक्रय होता है। इस अव्यवस्था के विरोध में मैत्रेयी ने आक्रोश प्रकट किया है।

पाखंडी और दोगला समाज नारी को लेन-देन का द्रव्य समझता है, जिसकी न कोई अभिलाषा, न कोई अधिकार। मैत्रेयी लिखती है- "विपन्ना मानसिकता के दुमुँहे समाज में आज भी नारी मात्र वस्तु! मात्र सम्पति! विनिमय की चीज!"[5] यहां विधवा विवाह वरदान नहीं बल्कि अभिशाप की तरह है। उर्वशी अपने भाई अजीत के फैसले का प्रतिरोध तो करती है परंतु हालातों के मद्देनजर समर्पण करना ही उचित समझती है। परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करना उसकी मजबूरी बन गई है।

उर्वशी ने स्वयं के साथ होते अन्याय का विरोध करके भी चुप रहना उचित समझा था परंतु विजय की नवोढ़ा विधवा बहू के समय चुप नहीं रह सकी। बरजोर सिंह की खिलाफत कर उसका पुनर्विवाह उदय से करवा देती है। उर्वशी के अंदर की दबी-कुचली स्त्री विद्रोह करती है- "उदय की शादी के लिए जो लोग आये हैं पइसा वाले हैं, अपनी बिटिया के लिए आसानी से उदय जैसा वर खोज लेंगे.....लेकिन हमारे विजय की बहू.... कहां जाएगी वह? कौन ब्याहने आएगा उसे? तुमने कबहूँ सोची जे बात? कैसे कटेगी उसकी जिंदगानी....? बेटा ना रहौ तो बहू बिरानी हो गयी? धक्का मारदऔ वाय? हमारे रहते जा अनरथ नहीं हो सकत..... एक से हजार तक नहीं.....'[6]

एक औरत ही दूसरी औरत की पीड़ा को अच्छी तरह से समझ सकती है और उसे समाज में उपयुक्त स्थान दिला सकती है। इसके लिए स्त्री को अपनी आत्मशक्ति को जागृत कर हिम्मत के साथ अन्याय के विरूद्ध आवाज उठानी होगी, तभी यह सही मायने में नारी-संवाद होगा। जब तक स्त्री सशक्त होकर अपने अधिकारो के लिए नहीं लड़ेगी, तब तक उसे इस पुरुष प्रधान समाज में न बराबरी का सम्मान मिलेगा और न शोष से मुक्ती। मैत्रेयी ने यहां स्त्री सशक्तीकरण को अंकित करने का प्रयास किया है। विजय की विधवा बहू का उदय के साथ पुनर्विवाह पर बरजोर सिंह के मना करने पर, उर्वशी विरोध स्वरूप कहती है- "आपके घर की बहू है वह। इज्जत-आबरू है। इतै के सुख-दुखों की हकदार, हिस्सेदार है वह।"[7] दादी भी इस पवित्र काम में उर्वशी का पूर्ण सहयोग करती है। बरजोर सिंह, दादी को उर्वशी के क्रियाकलाप का उलाहना देता है तो दादी जवाब देती है-" लला काऊ कों तौ आगे आने ही पड़ है।"[8] उर्वशी घर की सर्वेसर्वा के रूप में निर्णय लेती है। वह बड़ी चतुराई के साथ विजय की विधवा बहू को घर की इज्जत घर में रखते हुए उदय से शादी करवा कर स्त्री-हक दिलाती है। विधवा होने के कारण, उर्वशी ने जो कुछ सहा, कष्ट झेला, अपमान के घूंट पिए, वह नहीं चाहती की विजय की बहू के साथ भी वैसा ही हो।

उपन्यास की नारी पात्र, विधवा दादी अनुभव से जागरूक हुई नारी है। मैत्रेयी के अनुसार- ‘‘दादी बड़ी-बूढ़ी थी। जीवन के न जाने कितने उतार-चढ़ाव देखें होंगे। कितनी पीड़क स्थितियों से जूझी होगी।‘‘[9] वह अपने व्यभिचारी दुश्चरित्र विधुर पुत्र को खूब खरी खोटी सुनाती है। जब वह अपने एकांकी जीवन का ढ़िढ़ोरा पीटते हुए कहता है- “बिना औरत के गिरिस्ती चलत है कहूँ?“[10] तो दादी कहती है- “काऊ और की देहरी पै धर देते तुम्हें और पहर लेते दूसरे मरद की बिछिया तौ लला, आज मूँछ सूधी करके बात नहीं कर पाउते तुम। दूसरे के द्वारे कुत्ता कि-सी जिंदगी काटते। आदमी की जात जनी को तो छाती से लगा लेत है पर पहले मरद के बच्चा को नहीं झेल पाउत और जो लला, तुम्हें यहीं पटक फेंक जाते तौ तुम आज न जाने कौन गली में भटकते।“[11]

दादी का प्रश्न है कि क्या वैधव्य झेलकर उन्होंने बच्चों की परवरिश नहीं की है? इनके लिए भी अकेलापन दुःख ही था। पुरुष जब अकेलेपन के लिए चिंतित हैं तो क्या स्त्री अपने अकेलेपन के लिए चिंतित न हो। पुरूष की मानसिकता में स्त्री के प्रति सोच व स्त्री की मानसिकता में पुरुष के प्रति सोच में भिन्नता क्यों? इसका कारण लैंगिक असमानता है। मैत्रेयी जी ने प्रस्तुत संदर्भ को उठाकर लैंगिक समानता का आह्वान किया है।

मैत्रेयी ने समाज के दोहरे चरित्र को दिखाने का प्रयत्न किया हैं। पुरुष प्रधान समाज में पुनर्विवाह एक ऐसी व्यवस्था है जो पुरुष के लिए सुखद व मान-मर्यादा बढाने वाला, परंतु एक स्त्री के भविष्य कोे असुरक्षा से शंकामुक्त न करने वाला। स्त्री मन अनेक तरह के संशयों मंे ही डूबा रहता है। पुनर्विवाह एक स्त्री-जीवन में आने वाली विपति को नकार नहीं सकता, इसलिए वरण करना सहज नहीं है। एक संतति वाली स्त्री सम्मुख तो यह प्रश्न और भी भयानक रूप लेकर आता है। प्रथम पति की संतान के प्रति मोह तथा दूसरे विवाह से पक्षपात, आर्थिक और आगामी भविष्य की चिंता, स्त्री को पुनर्विवाह करने से रोकता है। इसका संकेत मैत्रेयी जी ने उपन्यास की भूमिका में ही स्पष्ट किया है। वह लिखती है- “क्योंकि वह औरत है, औरत सदैव रहती है, सहने के लिए, झेलने के लिए और जूझने के लिए।“[12]

विपरीत परिस्थितियाँ मनुष्य को संघर्ष के लिए सक्षम बनाती है। संघर्ष का दूसरा नाम स्त्री है, बतलाता है कि महिलाएं जीवन में आने वाली बाधाओं, कठिनाइयों और चुनौतियों का डटकर सामना करती हैं। वे विपरीत परिस्थितियों में हार नहीं मानतीं है बल्कि कुछ कर गुजरने की क्षमता रखती है। यह कथन उनकी सहनशीलता, शक्ति और दृढ़ संकल्प का पर्याय है। और तो और स्त्री का जन्म भी संघर्षों के साथ होता है। कई बच्चों के उपरांत जीवित बचने वाली उर्वशी के लिए उसकी माँ कहती है- ‘‘उरवसी बेटी की जात हती सो जी गयी, लरका होतो तौ न बचतौ।’’[13]

लड़की के लिए योग्य वर ढूंढ़ना भी किसी चुनौती से कम नहीं है। उर्वशी के लिए वर ढूंढ़ते समय भाई, बहन को धनवान के हाथों सौदा करने का प्रयत्न करता है। शादी में होने वाले खर्च से बचना चाहता है। जब उसकी नहीं सुनी जाती है तो वह धमकी देते हुए अपना पला झाड़ लेता है। घर का माहौल इतना कष्टप्रद बन जाता है कि लड़की को अपने होने पर हीनता महसूस होती है। उर्वशी, मीरा से कहती है- “मीरा, भगवान काहे के लाने बिटिया को जनम देता है? वो नहीं जानत है की लड़की पैदा होके कित्तों को विपदा में डार देगी। देख रही मीरा तुम ‘‘‘‘ हम न होते तो इत्ते कलेस मचती?“[14] एक लड़की को सामाजिक संस्कारों एवं नियमों की समझ से पहले ही शादी के बंधन में जकड़ दिया जाता है। कच्ची उम्र में शादी और गौना, ऊपर से कम उम्र में ही विधवा होने का दंश, एक लड़की को नारकीय जीवन जीने को मजबूर करता है। मैत्रेयी लिखती है- “न घूँघट, न आड़। यह भी नहीं जानती थी कि पति के निधन पर कैसे रोये। चूड़ी तोड़ने को कहा तो चुपचाप दोनों हाथ आगे कर दिये‘‘‘‘काँच की चूड़ियाँ छन-छन टूटती रहीं। बहू देखती रही-निर्निमेष। बड़ी-बड़ी आँखों की सीपियाँ घनी बरौनियों के बीच भर आयी। पाँव की उँगलियों पर किसी का हाथ गया‘‘‘‘ बिछिया उतारते ही दहाड़ मार कर रो उठी। लिपट गयी पास बैठी उर्वशी से। उसकी छाती से लगी देर तक सुबकती रही। यह क्या हो रहा है उस अबोध की समझ से परे था।“[15]

जब पुरुष किसी नेक कार्य के लिए कदम उठाता है तो उसमें उसकी स्त्री रूपी पत्नी संपूर्णभाव से सहयोग करती है ताकि समाज में परिवार की मान मर्यादा बनी रहे। उर्वशी की शादी का जिम्मा जब नाना जी अपने कंधों पर उठा लेते हैं तो शादी के लिए पैसों की जरूरत के लिए नानी अपने जेवरात निकालकर खुशी-खुशी दे देती है। यहाँ स्त्री की त्याग भावना को दर्शाया गया है। नानी, नाना से कहती है- “अपने ऊपर ब्याह ओटौ है तो करौ खुसी से। घबड़ात काहे हौ!“[16]

मैत्रेयी ने गांवों में प्रचलित अंधविश्वासों को भी चित्रित किया है। सर्वदमन के मृत्यु की खबर आती हैं तब उर्वशी सोचती हैं- “हारी न बीमारी, फिर मृत्यु का यह अप्रत्याशित सन्देश? किसी ने ऐसे ही तो नहीं’’’’शायद सिर पर कौआ बैठ गया हो, तब भी तो ऐसी खबर भेज देते हैं।’’[17] सर पर कौवा बैठना अशुभ होने का संकेत है। इसी तरह जब उर्वशी सिरसा जाने के लिए निकलती है तब किसी ने छींक दिया। दादी चैंक पड़ी- ‘‘उरवसी बिटिया, ठहर जा। तनक पीछे जइयो। चल, लौट के पानी पीलै।’’[18] वे जल्दी ही लोटे में पानी भर

लाई। उर्वशी को पानी पिलाया और सिरसा जाने के लिए विदा किया। इसी तरह उर्वशी का पुनर्विवाह मीरा के बाप से हो जाता है तो मीरा बदहवास रहने लग जाती है- "आजी परेशान थी- जे बखत-बेबखत मोंड़ी के का हो जात है। हमारे जान में मीरा को कोई ऊपर की हवा परेसान कर रही है। छोटी से कहने पड़े है कि रमतोले कुम्हार से झरा ले आवें मोंड़ी कों।''[19] अशुभ निवारण के लिए ऐसा करना गाँवों में अंधविश्वास पर टिका विश्वास है। गाँव में आज भी इस तरह के चलन का प्रचलन है।

सच में यह उपन्यास स्त्री के "काल के स्याह अँधेरों में भटकती त्रासद जिन्दगी! दुःख-दर्दों की व्यथा कथा है।"[20] यह उन सभी स्त्रियों की पर्याय है जो बर्दाश्त करने, दुःख भोगने और जिंदगी में संघर्ष करने के लिए जन्म लेती है। संघर्षों से लोहा लेती हुई संसार को अलविदा कह जाती है, उर्वशी की तरह.....पर मर कर भी, वह रहती है। मैत्रेयी लिखती है- "क्योंकि वह औरत है, औरत सदैव रहती है।"[21]

मैत्रेयी स्त्री शिक्षा पर तात्कालिक समय में समाज की सोच पर लिखती है-''उर्वशी के हाथ में कलम-कागज पकड़ाने का दुस्साहस कौन करता। बेटी तो वैसे ही 'पराये घर की दरिद्र' मानी जाती है।"[22] अर्थात लड़की को शिक्षा दिलवाने की न तो किसी में हिम्मत है न ही कोई फायदा। स्त्री को शिक्षित होकर करना ही क्या है। उसे तो घर ही संभालना है। बरजोर सिंह का मत है कि- "हओ, का होत मोंड़ियन को पढ़ा के, कौन-सी नौकरी-चाकरी कराने है। पराये घर जाने है, सो काम-धंधौ सीखें, गिरिस्ती सम्भारे।''[23] वही मैत्रेयी स्वयं मानती है कि स्त्री को अपनी स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए शिक्षित होना जरूरी है। वह घर संभालने के साथ-साथ ऑफिस भी संभाल सकती है। मीरा कहती है- "अम्मा की बड़ी इच्छा थी कि वह पढ़े। वह मरते समय नाना से हाथ जोड़-जोड़कर कह गयी थीं- "काका जू, हमें काऊ कौ भरोसो नइयाँ। तुम मीरा को झाँसी में पढ़इयो।"[24] मैत्रेयी के अनुसार स्त्री सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही सबसे उचित माध्यम है।

निष्कर्ष -

मैत्रेयी जी में अपने पात्रों के प्रति गहरी आत्मीयता है। विशेषतः वह अपने स्त्री पात्रों के साथ रहती है। स्त्री की पीड़ा और दुःख दर्द को उभारकर उसे परिस्थितियों के खिलाफ समाज में विद्रोही स्वर देने में सक्षम बनाती हैं। उपन्यास में मैत्रेयी जी ने उर्वशी की तुलना बेतवा नदी से की है। बेतवा स्वयं सुंदर, पवित्र एवं प्यासों के लिए जीवनदायिनी है। उर्वशी भी भाई की गृहस्थी, ससुराल की पवित्रता और सौतेली नवोढ़ा बहू के मंगल के लिए, परिवार और समाज के लिए अपना उच्च कामनाओं भरा जीवन विसर्जित कर देती है। यह उपन्यास स्त्रियों की परिस्थिति का न केवल निदर्शन कराता है बल्कि उस परिस्थिति से लड़ने का हौंसला भी देता है। गांवों में प्रचलित अंधविश्वासों पर से पर्दा उठाया है। स्त्री को 'त्याग की मूर्त' के रूप में चित्रित किया है। स्त्री को स्वतंत्र जीवन जीने और महत्वाकाक्षीं बनने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है।

सन्दर्भग्रन्थः -

1 पुष्पा, मैत्रेयी (2023): बेतवा बहती रही. (7वाँ संस्करण), किताबघर प्रकाशन, पृ0-6
2 वही, पृ0-117
3 वही, पृ0-140
4 वही, पृ0-106
5 वही, पृ0-08
6 वही, पृ0-142
7 वही, पृ0-143
8 वही, पृ0-143
9 वही, पृ0-121
10 वही, पृ0-126
11 वही, पृ0-126
12 वही, पृ0-08
13 वही, पृ0-14
14 वही, पृ0-28
15 वही, पृ0-137
16 वही, पृ0-34
17 वही, पृ0-62
18 वही, पृ0-97
19 वही, पृ0-124
20 वही, पृ0-08
21 वही, पृ0-08
22 वही, पृ0-22
23 वही, पृ0-53
24 वही, पृ0-15